7

वीर बालक अभिमन्यु

लगभग पाँच हजार साल पुरानी बात है। कौरव सौ भाई थे और सैंकड़ों उनके मित्र थे। पांडव पाँच भाई थे और उनके भी कई मित्र थे। कौरवों ने धोखा–धड़ी करके पांडवों को राज्य के अधिकार से वंचित कर दिया था। वे कई बार उनकी हत्या के प्रयत्न भी कर चुके थे। अंत में उनके बीच युद्ध की घोषणा हो गई।

कैसा युद्ध था वह ! भाई–भाई के विरुद्ध, भतीजे–काका के विरुद्ध, भानजे–मामा के विरुद्ध, पोते, दादा–नाना के विरुद्ध लड़ने–मरने के लिए मैदान में डटे थे। पांडवों में अर्जुन बेजोड़ तीरंदाज था। उसके कारण कौरवों का बहुत नुकसान हो रहा था। एक दिन कौरवों ने ऐसी योजना बनाई कि अर्जुन को युद्ध के मैदान से दूर दक्षिण दिशा की ओर अकेले लड़ने को जाना पड़ा।

दूसरे दिन कौरवों के सेनापति द्रोणाचार्य ने अपनी सेना इस ढंग से चक्करदार तरीके से जमाई कि जो भी उसमें घुसे वह जरूर ही मारा जाए। ऐसे तरीके को चक्रव्यूह कहते थे। ऐसे चक्रव्यूह में घुसने और निकलने की विद्या केवल अर्जुन को ही आती थी और अर्जुन उस दिन युद्ध के मैदान से बहुत दूर चला गया था। अब

पांडव क्या करते ?

वे सब चिंतित थे। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि चक्रव्यूह भेदने के लिए किसे आगे करें! वे समझ गए थे कि आज पांडवों में से कोई भी जीवित नहीं बचेगा। ऐसे में अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु ने कहा, ''तात, आप लोग चिंता न करें। चक्रव्यूह को भेदने की विद्या मुझे भी आती है। मैं आप लोगों को व्यूह तोड़कर भीतर तो ले जा सकूँगा, मगर बाहर आने की विद्या मुझे नहीं आती।''

भीम ने कहा, ''बस बेटा, हमें इतना ही चाहिए! एक बार भीतर घुसकर तो हम प्रलय मचा देंगे!''

''मगर, बालक अभिमन्यु को हम खतरे में डालें, यह हमें शोभा नहीं देता,'' धर्मराज ने कहा।

''बालक हूँ तो क्या हुआ ! समय आने पर तो बालक भी समाज के लिए अपना बलिदान कर देते हैं। यदि मेरी विद्या इस समय काम न आई तो मेरा जीवन निरर्थक हो जाएगा। आप तो मुझे आशीर्वाद दीजिए।''

उस दिन अभिमन्यु ही पांडव सेना का सेनापति बना। तीव्र शंखनाद के बीच उसने चक्रव्यूह पर आक्रमण किया। उसके पीछे–पीछे युधिष्ठिर, भीम, नकुल, सहदेव और दूसरे वीर व्यूह में घुसते गए। मगर कोई भी वीर व्यूह में तीसरे घेरे से आगे नहीं बढ़ सका। तीसरे घेरे में सब उलझकर रह गए। अकेला अभिमन्यु सातों घेरे तोड़ता हुआ चक्रव्यूह के केंद्र में पहुँच गया।

कौरवों के सेनापति द्रोणाचार्य विस्मित भी थे और प्रसन्न भी। सबके पितामह भीष्म भी विस्मय में थे। मगर दूसरे कौरव वीर भयभीत थे कि अगर यह बालक चक्रव्यूह तोड़कर निकल गया तो उनकी वीरता पर हमेशा–हमेशा के लिए कलंक लग जाएगा। ऐसे योद्धाओं में कर्ण , जयद्रथ, दुश्शासन, अश्वत्थामा और दुर्योधन का पुत्र लक्ष्मण आदि थे। उन्होंने प्रण किया कि चाहे जैसे भी हो, वे अभिमन्यु को चक्रव्यूह से बाहर नहीं जाने देंगे।

फिर क्या था ?

सब महारथियों ने उस वीर बालक को घेर लिया। उस जमाने में युद्ध का नियम होता था कि जिसके पास हथियार न हो और वह घायल हो तो उस पर वार नहीं किया जाता था। एक वीर से एक शत्रु ही युद्ध करता था। मगर उस बालक पर सात–सात योद्धा टूट पड़े। आखिरी दम तक यह वीर उनसे लड़ता रहा और अंत में वीर–गति को प्राप्त हो गया। वह घटना कौरवों के नाम पर भारी कलंक बनी और अभिमन्यु का नाम अमर हो गया।

शिक्षण संकेत – यह पाठ साहस और वीरता के भावों को जगाने के उद्देश्य से लिखा गया है। पाठ की कथावस्तु से कुछ प्रेरक प्रसंग चुनकर कक्षा में तदनुकूल वातावरण उत्पन्न करने का प्रयास करें।

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

चक्रव्यूह	–	घेराबंदी, षड्यंत्र
आशीर्वाद	–	आशीष देना
शंखनाद	–	युद्ध आरंभ की शंख ध्वनि
विस्मित	–	आश्चर्यचकित
कलंक	–	दाग, धब्बा

शत्रु – दुश्मन

उच्चारण के लिए

घोषणा, वंचित, विरुद्ध, अर्जुन, दक्षिण, निरर्थक, महारथी

सोचें और बताएँ

1. चक्रव्यूह में कितने घेरे थे ?
2. पाण्डव कितने भाई थे ?
3. पाण्डवों के साथ धोखा–धड़ी किसने की ?

लिखें

1. सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखें।

   (अ) कौरवों के सेनापति थे–

   (क) दुर्योधन (ख) द्रोणाचार्य

   (ग) जयद्रथ (घ) कर्ण ( )

   (ब) चक्रव्यूह में घुसने की विद्या अर्जुन के अलावा किसको आती थी ?

   (क) भीम को (ख) नकुल को

   (ग) अभिमन्यु को (घ) सहदेव को ( )

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें–

   (राज्य, निरर्थक, चक्रव्यूह)

   (अ) यदि मेरी विद्या इस समय काम न आई तो मेरा जीवन .... हो जाएगा।

   (ब) अभिमन्यु सातों घेरे तोड़ता हुआ ..... के केन्द्र में पहुँच गया।

   (स) कौरवों ने पांडवों के साथ धोखाधड़ी कर उन्हें.....के अधिकार से वंचित कर दिया।

3. कौरवों और पांडवों के बीच युद्ध होने का कारण क्या था ?
4. चक्रव्यूह की रचना के दिन अर्जुन कहाँ गया था ?
5. चक्रव्यूह के दिन पांडव क्या सोचकर परेशान हो रहे थे ?
6. ''अभिमन्यु को घेरे से बाहर नहीं जाने देंगे।'' यह प्रण किन लोगों ने

किया और क्यों ?

भाषा की बात

- दिए गए उदाहरण के अनुसार एक से अनेक में बदलते हुए शब्द का वाक्य में प्रयोग करें।

बात	बातें	शिक्षाप्रद बातें सुननी चाहिए।
रात		
साँस		
वीर		
गाय		

- निम्नलिखित संज्ञा शब्दों में से जातिवाचक, भाववाचक और व्यक्तिवाचक वर्गों में बाँटिए :–

अभिमन्यु, गाय, मैदान, मित्र, घटना, कलंक, शंख, बालक, सेना, बचपन, मानवता, महारथी, लक्ष्मण, हमलावर, युद्ध क्षेत्र

जातिवाचक	भाववाचक	व्यक्तिवाचक

यह भी जानें

- आप अपने शब्दों में कौरव व पांडवों के युद्ध से संबंधित एक लेख तैयार कर अपनी कक्षा में सुनाएँ।
- पाँचों पांडवों के नाम लिखें।

क्र. सं.	नाम
1	
2	
3	
4	
5	

- अध्यापक जी के सहयोग से मिलान करें।

महापुरुष	ग्रन्थ
राम	कुरान
कृष्ण	बाइबिल
गुरुनानक	गीता
मोहम्मद साहब	गुरुग्रन्थ साहिब
ईसा मसीह	रामायण

समय को व्यर्थ नष्ट मत करो क्योंकि यही वह चीज़ है जिसमें जीवन का निर्माण हुआ है।

—बैंजामिन फ्रेंकलीन